समसामयिक षिक्षा में मूल्य शिक्षा का महत्व

डॉ0 कुमार विज्ञानानंद सिंह सहायक प्राध्यापक
बी. एड. विभाग, मधेपुरा कॉलेज, मधेपुरा (बिहार)

सार

मानव जीवन अनमोल है। हम सभी अपने जीवन की रक्षा करते हैं क्योंकि हम किसी भी चीज़ से अधिक इसकी देखभाल करते हैं। यदि जीवन इतना महत्वपूर्ण है, तो जीवन के मूल्य और भी महत्वपूर्ण हैं। मानव सिद्धांतों का पालन कर रहे हैं, या व्यवहार के मानक जो एक विशेष समाज द्वारा एक व्यक्ति के जीवन में वांछनीय, महत्वपूर्ण और उच्च सम्मान में माना जाता है। "मूल्यों और नैतिकता का महत्व एक नागरिक और न्यायपूर्ण समाज में हम जिस तरह जीते हैं। वे वही हैं जो हम अपने व्यवसायों और पेशेवर व्यवहार में, अपने दोस्तों और परिवार के साथ, दूसरों के साथ हमारी बातचीत को निर्देशित करने के लिए उपयोग करते हैं। हमारे मूल्य और नैतिकता वही हैं जो हम अपने बच्चों और हमारे आस–पास के बच्चों के लिए मॉडल बनाने की उम्मीद करते हैं, क्योंकि बच्चे हमें देखते हैं जिससे वे सही और गलत की अपनी भावना विकसित करते हैं। आज के परिदृष्य में हमारे मूल्यों को नई पीढ़ी के नए फैशन के द्वारा त्याग दिया गया है। ऐसी स्थिति में किसी के लिए यह बहुत जरूरी है कि वह हमारे लिए बुनियादी सिद्धांतों को अपनाए ताकि हम एक उज्जवल जीवन जी सकें, इस प्रकार मूल्य शिक्षा इस आवश्यकता को बहुत आसानी से पूरा करती है। इस शोध–पत्र में समसामयिक षिक्षा में मूल्य षिक्षा के महत्व का विषलेषण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य–षब्दः *समसामयिक समय; मूल्य षिक्षा; अर्थ; महत्व; भूमिका।*

परिचय

मूल्य शिक्षा का अर्थ है बच्चों में मानवता का भाव जगाना, दूसरों और देश की भलाई के लिए एक गहरी चिंता पैदा करना। यह तभी पूरा हो सकता है जब हम बच्चों में उन मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता की गहरी भावना पैदा करेंगे जो इस देश का निर्माण करेंगे और काम में गर्व करने वाले लोगों को वापस लाएंगे जो आदेश, सुरक्षा लाते हैं और प्रगति का आश्वासन दिया। उचित मूल्यों वाला व्यक्ति समस्याओं का सामना करने से नहीं डरता है। वह उम्मीद करता है या वह उन्हें जीवन के हिस्से के रूप में स्वीकार करता है। वह जो कुछ भी करता है, उसे वह आवश्यक रूप से महत्व नहीं देता है। उसे ईश्वर पर पूर्ण विश्वास होता है। ऐसा व्यक्ति बाकी लोगों के लिए एक उदाहरण होता है। एक मजबूत चरित्र के निर्माण के लिए जीवन में अंतिम लेकिन कम से कम हमें अपने स्वयं के मूल्यों से प्यार करना चाहिए। यह हमें अपने जीवन का नेतृत्व करने में मदद करता है क्योंकि इसे नेतृत्व करना चाहिए। यह जीवन के उद्देश्य की पूर्ति के लिए बहुत आवश्यक है। मूल्य हमारे रिश्तों, हमारे व्यवहारों, हमारी पसंद, और हमारी भावना को आकार देते हैं कि हम कौन हैं। जितने सकारात्मक हमारे मूल्य, उतने ही सकारात्मक हमारे कार्य। यह एक कारण है कि मूल्य शिक्षा को पढ़ाया जा रहा है या सभी प्रकार की शिक्षा में शामिल किया गया है, क्योंकि यह छात्र की अपनी पसंद के करियर में सफल होने के लिए एक महान भूमिका निभाता है। शिक्षा में मूल्य वैसा ही होता है जैसा कि मनुष्य का गुण होता है। मूल्य शिक्षा छात्र को एक प्रतिस्पर्धी दुनिया में प्राप्त करने की आवश्यकता और अपने साथी प्राणियों के प्रति करुणा करने की आवश्यकता को बताती है। जबकि समाज आज कई दबावों का सामना कर रहा है और अपनी प्रतिस्पर्धी अंकन प्रणाली के साथ आधुनिक दिनों की उन्नति की शिक्षा एक बाजार उन्मुख समाज का निर्माण कर रहा है। बच्चों को बाजार में शीर्ष वेतन नौकरियों पर कब्जा करने के लिए पेशेवर होने के लिए तैयार किया जा रहा है। मूल्य शिक्षा बच्चे को उसके प्रत्येक पहलू के सामंजस्य के लिए शिक्षित कर रही है। आध्यात्मिक, शारीरिक, भावनात्मक, बौद्धिक और मनोवैज्ञानिक रूप से मूल्य षिक्षा षिक्षित करती है ताकि समग्र रूप से उनके व्यक्तित्व का विकास हो सके।

मूल्य आधारित शिक्षा का अर्थः

शिक्षा ज्ञान, आत्म–संरक्षण और सफलता का वाहन है। शिक्षा न केवल सफल होने के लिए एक मंच प्रदान करती है, बल्कि सामाजिक आचरण, शक्ति, चरित्र और आत्म–सम्मान का ज्ञान भी देती है। सबसे बड़ी उपहार शिक्षा हमें बिना शर्त प्यार और मूल्यों के एक सेट का ज्ञान है। इन मूल्यों में सही और गलत के बीच सरल अंतर, भगवान में एक विश्वास, कड़ी मेहनत और आत्म–सम्मान का महत्व शामिल है। शिक्षा एक निरंतर सीखने का अनुभव है, लोगों से सीखना, नेताओं और अनुयायियों से सीखना और फिर वह व्यक्ति बनना जो हम होना चाहते हैं। मूल्य आधारित शिक्षा किसी भी लिंग और आयु के किसी भी व्यक्ति का तीन गुना विकास है, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि एक बच्चे के लिए शिक्षा तीन पहलुओं को विकसित करने की कोशिश करती हैः काया, मानसिकता और

चरित्र। भले ही काया और मानसिकता महत्वपूर्ण हैं, वे तीसरे के बिना अधूरा हैं क्योंकि चरित्र इनमें से सबसे बड़ा है। इस क्षेत्र में शिक्षा की बहुत बड़ी भूमिका है। मूल्य–आधारित शिक्षा एक ऐसा उपकरण है जो न केवल हमें एक ऐसा पेशा प्रदान करता है जिसे हम आगे बढ़ा सकते हैं बल्कि जीवन में एक उद्देश्य भी बना सकते हैं। हमारे जीवन का उद्देश्य निस्संदेह स्वयं को जानना और स्वयं होना है। हम ऐसा तब तक नहीं कर सकते जब तक हम खुद को उस जीवन के साथ पहचानना नहीं सीखते। भारत जैसे देश में शिक्षा का उद्देश्य, जो एक शानदार विरासत है और भूगोल, संस्कृति, मूल्यों और मान्यताओं में विविधता का दावा इस विस्तृत दुनिया में बहुत कम देखा जाता है, को मूल्य प्रणाली के एक छात्र को शिक्षित करना चाहिए जो कि अपरिहार्य है सफल जीवन जीते हैं।

समकालीन समाज में मूल्य शिक्षा की भूमिका:

प्रत्येक देश अपनी विशिष्ट सामाजिक–सांस्कृतिक पहचान को व्यक्त करने और बढ़ावा देने के लिए और समय की चुनौतियों का सामना करने के लिए शिक्षा की अपनी प्रणाली विकसित करता है। यद्यपि देश ने विभिन्न क्षेत्रों जैसे वैज्ञानिक प्रौद्योगिकी, आर्थिक बुनियादी ढांचे आदि में तेजी से प्रगति की है, लेकिन इसकी मूल्य प्रणाली को अस्वीकार कर दिया गया है। इसलिए, सामान्य रूप से शिक्षा और मूल्य शिक्षा विशेष रूप से समकालीन समाज के आधुनिक संदर्भ में एक प्रतिष्ठित स्थान पर है। युवाओं की मूल्य शिक्षा की समस्या ने हाल के दिनों में शैक्षिक चर्चा में बढ़ती प्रमुखता ग्रहण की है। माता–पिता, शिक्षक और समाज बड़े पैमाने पर बच्चों के मूल्यों और मूल्य शिक्षा के बारे में चिंतित हैं। हम आज पूरे विश्व में जबरदस्त मूल्य संकट देख रहे हैं। मूल्य और इसके संस्थानों के प्रति एक अभावग्रस्त रवैया आज दुनिया में व्याप्त है। स्वार्थ, झड़प और टकराव के बर्बर गुणों का पुनः प्रकट होना मानव समाज के पतन की प्रक्रिया का स्पष्ट संकेत देता है। मानव जीवन के मूल्यों को पुनर्जीवित करने और सुधारने और सभ्यता की नींव को फिर से जीवंत करने के लिए एक महान प्रयास की तत्काल आवश्यकता है। मूल्य उपलब्धियों के लिए निर्धारित किए गए लक्ष्य हैं और वे हमारी सभी गतिविधियों को संज्ञानात्मक और सकारात्मक रूप से परिभाषित और रंगीन करते हैं। उन्हें सामाजिक रूप से परिभाषित इच्छाओं और लक्ष्यों के रूप में वर्णित किया जाता है जिन्हें कंडीशनिंग, सीखने और समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से आंतरिक किया जाता है। वर्तमान शिक्षा को नैतिक, आध्यात्मिक और सौंदर्य मूल्यों को भी इसमें शामिल करने की आवश्यकता है। केवल मूल्य शिक्षा की सहायता से संस्कृति और परंपराओं को अगली पीढ़ी में संरक्षित और स्थानांतरित किया जा सकता है। मूल्य शिक्षा का संबंध व्यक्तिगत पूर्णता के लिए प्रयास करने के साथ–साथ दूसरों के प्रति एक जिम्मेदार रवैया और गलत और सही व्यवहार की समझ पैदा करने से है। मूल्य शिक्षा में सबसे रचनात्मक कारक इसका उद्देश्य है जो बच्चे को जीवित मार्गदर्शन की पेशकश करते हुए शक्तियों का पता लगाने और व्यवहार के लिए उचित सीमा निर्धारित करने के लिए प्रोत्साहित करता है। मूल्य शिक्षा लोगों और आदर्शों के लिए सकारात्मक भावनाओं के निर्माण और मजबूत करने में मदद करती है। इसे सामाजिक जीवन में सक्रिय भागीदारी और सामाजिक नियमों की स्वीकृति के लिए व्यक्तियों को तैयार करना चाहिए। मूल्य शिक्षा को शिक्षा के विभिन्न पहलुओं में शामिल किया जाना है। समाज में मूल्य शिक्षा के महत्व को फैलाने के लिए उच्च अधिकारियों द्वारा ध्यान देने की आवश्यकता है।

मूल्य शिक्षा का महत्व:

शिक्षा मानवता के बारे में बुनियादी तथ्यों को सीखने की दिशा में एक व्यवस्थित प्रयास है। मूल्य शिक्षा के पीछे मुख्य विचार छात्रों में आवश्यक मूल्यों की खेती करना है ताकि सभ्यता जो हमें जटिलताओं का प्रबंधन करना सिखाती है, उसे निरंतर और आगे विकसित किया जा सके। यह घर से शुरू होता है और इसे स्कूलों में जारी रखा जाता है। हर कोई समाज या सरकार जैसे विभिन्न माध्यमों से अपने जीवन में कुछ चीजों को स्वीकार करता है। मूल्य शिक्षा हर उस मूल्य प्रणाली को बेहतर बनाने में मदद करने के लिए महत्वपूर्ण है जो वह रखती है और उनका उपयोग करने के लिए रखती है। एक बार, हर कोई जीवन में अपने मूल्यों को समझ चुका होता है जिसे वे अपने जीवन में बनाए गए विभिन्न विकल्पों की जांच और नियंत्रण कर सकते हैं। व्यक्ति को अपने जीवन में विभिन्न प्रकार के मूल्यों जैसे सांस्कृ तिक मूल्यों, सार्वभौमिक मूल्यों, व्यक्तिगत मूल्यों और सामाजिक मूल्यों को अक्सर अपनाना पड़ता है। इस प्रकार, किसी के जीवन को आकार देने और उसे वैश्विक मंच पर खुद को प्रदर्शित करने का अवसर देने के लिए मूल्य शिक्षा हमेशा आवश्यक है। माता–पिता, बच्चों, शिक्षकों आदि के बीच मूल्य शिक्षा की आवश्यकता लगातार बढ़ रही है क्योंकि हम लगातार बढ़ती हिंसक गतिविधियों, व्यवहार संबंधी विकार, समाज में एकता की कमी आदि को देखते रहे हैं। भारत में परिवार प्रणाली में मूल्य प्रदान करने की एक लंबी परंपरा है। लेकिन माता–पिता की आधुनिकता और तेजी से बदलती भूमिका के साथ, माता–पिता के लिए अपने वार्ड में प्रासंगिक मूल्यों को लागू करना बहुत आसान नहीं रहा है। इसलिए आज कई संस्थान विभिन्न मूल्य शिक्षा कार्यक्रम संचालित करते हैं जो आधुनिक समाज की बढ़ती समस्याओं को संबोधित करते हैं। ये कार्यक्रम बच्चों, युवा, वयस्कों आदि के विकास पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जो खुशी, विनम्रता, सहयोग, ईमानदारी, सादगी, प्रेम, एकता, शांति आदि जैसे क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

भारत में मूल्य शिक्षा का महत्वः

भारत में प्राचीन काल से मूल्य शिक्षा का प्रमुख स्थान रहा है। गुरुकुल चरण से बच्चे ने न केवल पढ़ने और धनुर्विद्या के कौशल को सीखा, बल्कि जीवन के दर्शन के साथ–साथ उसके साम्राज्य के संबंध में भी सीखा। इसलिए भारत में शिक्षा इस दृष्टि से पैदा हुई थी कि किसी व्यक्ति के अनुभव को परमात्मा की एक चिंगारी के रूप में प्राप्त किया जाए और इस प्रक्रिया में किसी के कर्तव्य का अभ्यास ज्ञान के अधिग्रहण के साथ होता है। आधुनिक स्कूल प्रणाली मूल्य शिक्षा में, नैतिक शिक्षा या नैतिक विज्ञान कहा जाता था। आज भारत के अधिकांश विद्यालयी शिक्षा के माध्यम से मूल्य शिक्षा प्रदान करते हैं। निजी स्कूल मूल्य–शिक्षा पर कक्षा–वार किताबों के माध्यम से मूल्य शिक्षा प्रदान करते हैं, जबकि अन्य स्कूल समय–सारणी में विशेष समय पर मूल्य शिक्षा प्रदान करते हैं। विशेष विषयों और मूल्य शिक्षा के विषयों पर विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से (राष्ट्रीय एकीकरण, चरित्र निर्माण, ईमानदारी आदि गुण) विद्यालय में मूल्य षिक्षा प्रदान किया जाता है।

स्कूलों में बच्चों के लिए मूल्य शिक्षा महत्वपूर्ण है, पाठ्यक्रम में कहानी, पावर प्वाइंट प्रोग्राम, गतिविधियों आदि के माध्यम से मूल्य शिक्षा के विभिन्न रूप शामिल हैं। बच्चों को मूल्य शिक्षा के विभिन्न विषयों पर पुस्तकें, वीडियो और स्रोत सामग्री प्रदान की जाती है।

निष्कर्षः

मूल्य या नैतिक मूल्य किसी भी समाज या राष्ट्र के विकास का सही परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करते हैं। वे हमें बताते हैं कि किसी समाज या राष्ट्र ने खुद को किस हद तक विकसित किया है। मूल्य सद्गुण, आदर्श और गुण हैं जिन पर कार्य और विश्वास आधारित हैं। मूल्य हमारे विश्व दृष्टिकोण, दृष्टिकोण और आचरण को आकार देने वाले सिद्धांत हैं। हालांकि हमारे प्रेम, शांति, खुशी, दया और करुणा के साथ–साथ सम्मान, विनम्रता, सहिष्णुता, जिम्मेदारी, सहयोग, ईमानदारी और सादगी जैसे सकारात्मक नैतिक गुण हैं।

वर्तमान समय में नैतिक पतन होता है। मूल्य अधः पतन के मुख्य कारण हैंः

- मानव जीवन की पवित्रता के लिए सम्मान का अभाव;
- परिवारों में बच्चों के माता–पिता के नियंत्रण का टूटना;
- कानून के उल्लंघन के माध्यम से देखे गए अधिकार के लिए सम्मान का अभाव;
- नियमों और विनियमों की अवहेलना अपराध और भ्रष्टाचार;
- शराब और नशीली दवाओं का दुरुपयोग;
- महिलाओं और बच्चों और समाज के अन्य कमजोर सदस्यों का दुरुपयोग;
- अन्य लोगों और संपत्ति के लिए सम्मान की कमी;

इन सभी प्रकार की समस्याओं को हल करने के लिए उपरोक्त समस्याओं के मुख्य कारणों को जानना आवश्यक है। हम जानते हैं कि आज बच्चे कल के नागरिक हैं। यदि हम वर्तमान समय के बच्चों को अच्छी शिक्षा देते हैं, तो आने वाली पीढ़ियों का भविष्य अच्छा होगा। शिक्षा सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान है। अब हम आधुनिक सदी में जी रहे हैं। यदि हम विज्ञान और प्रौद्योगिकी का उचित तरीके से उपयोग करते हैं तो हमारे लिए गैर–नैतिक और मूल्य की सभी समस्याओं को हल करना मुश्किल नहीं है।

संदर्भ

1. दास, सयान (2008) मूल्य आधारित शिक्षा, दीप प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 41
2. कुमार, प्रदीप (2009) समकालीन समाज में मूल्य शिक्षा की भूमिका, नवजीवन प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 76
3. रेड्डी, नरगंटी (2007) वर्तमान समय की स्थिति में नैतिक मूल्यों का महत्व, ज्ञानदा पब्लिकेशन, कोलकाता, पृ. 132
4. फ़रर, एफ. (2000) ए क्विट रिवोल्यूशनः एनोचार्जिंग पॉजिटिव वैल्यूज़ इन अवर चिल्ड्रन, राइडर पब्लिकेशन, लंदन, पृ. 35
5. बर्गमार्क, यू. (2007) दूसरों के साथ बैठकों के माध्यम से नैतिक शिक्षा, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लर्निंग, 14, 105–12।